

सम्पादकीय

हिंदुत्व का इतालवी संपर्क : आरएसएस की विचारधारा को समानांतर इतालवी फासीवाद

पिछले महीने उत्तर प्रदेश की शारदा यूनिवर्सिटी के पॉलिटिकल साइंस के एक शिक्षक ने अपने विद्यार्थियों से यह सवाल पूछा : 'क्या आप फासीवाद नामीदार और हिंदू दक्षिणांश (हिंदुत्व) में किसी तरह की समानता पाते हैं?' तर्कों के साथ वर्णन किए। यूनिवर्सिटी के अधिकारियों ने शिक्षक को इस आधार पर निलंबित कर दिया कि ऐसा प्रश्न करना हमारे देश की 'महान राष्ट्रीय पहचान' के पूरी तरह प्रतिकूल है और इससे 'सामाजिक कलह' पैदा हो सकती है।

इस आलेख में उस सवाल का जवाब देने की कोशिश की जा रही है। मैंने इतालवी इतिहासकार मारिया कासोलारी के लेखन, खासतौर से इकोनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली में वर्ष 2000 में प्रकाशित उनके लेख हिंदुत्व कॉरेन टाइ-अप इन द 1930 और उनके द्वारा वीस साल बाद प्रकाशित एक किताब शेंडो ऑफ स्यारिस्टक : द रिलेशनशिप्स विट्यैन रैडिकल नेशनलिज्स फासिज्म ऐंड सामाजिक का अपने मुख्य स्रोत की तरह इस्तेमाल किया है। डॉ. कासोलारी का काम इटली, भारत और ब्रिटेन के अभिलेखगारों में जाकर किए गए गहन शोध के साथ ही विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध सामग्री पर आधारित है।

उन्होंने दिखाया कि 1920 और 1930 के उम्मीदों में राष्ट्रीय फासीवाद पर फासीवाद के उम्मीदों के गहरी दिलचस्पी, बल्कि प्रसारात्मक तरीके से करव किया। उसका यह भी विचार था कि भारत में इसी तरह की विचारधारा कृषि पर निर्भर इस पिछडे देश में बदलाव लाकर उसे उभरती हुई औद्योगिक शक्ति बना सकती है और बेलगाम समाज को एक व्यवस्था और अनुशासन से बांध सकती है।

मुसोलिनी और फासीवाद पर केंद्रित इन चमकते लेखों को, जिनमें से कई को कासोलारी ने उद्धृत किया, राष्ट्रीय खर्चयेसक अंधेरे के प्रमुख नेताओं के गहरी हेडगेवर और एमएस गोलवलकर और हिंदू महासभा के प्रमुख नेताओं विनायक दामोदर सावरकर तथा वीस मुंजे ने भी पढ़ाकृ इन चारों की मात्रामात्रा माराती थी। कासोलारी ने लिखा, '1920 के दशक के अंत में महाराष्ट्र में फासीवादी सत्ता और और अनुशासन से बांध सकती है।'

हिंदू राष्ट्रावादियों को, निस्सदेह फासीवाद के जिस पहलू ने सबसे अधिक प्रभावित किया, वह था अराजकता से व्यवस्था की ओर इतालवी समाज का कथित बदलाव और उसका सैन्यीकरण। इस लोकतंत्र विरोधी प्रणाली को लोकतंत्र का एक सकारात्मक विकल्प माना जा रहा था। दरअसल लोकतंत्र को एक विशिष्ट ब्रिटिश संस्था के रूप में देखा जाता था।' कासोलारी के शोधों के एक अहम किरदार हैं डॉ. वीस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस (मुसोलिनी) ने भारतीय आगंतुक से पूछा कि वह फासीवादी युवा संगठनों के बारे में क्या सोचते हैं, तो मुंजे ने उत्तर दिया : 'महामहिम, मैं बहुत प्रभावित हूं।'

प्रत्येक महत्वाकांक्षी और बढ़ते राष्ट्र को ऐसे संगठन की जरूरत होती है। भारत को अपने सैन्य उत्थान के लिए उनकी सबसे ज्यादा जरूरत है। इटली के फासीवादी तानाशाह से हुए हर अपने संवाद के बारे में मुंजे ने लिखा : 'इस तरह यूरोपीय दुनिया की एक महान शक्तिक्षेप सिंगारे मुसोलिनी से भी यादगार साक्षात्कार का समापन हुआ। वह चौड़े चेहरे, दोहरी ढुक्की और चौड़ी छाती वाले लंबे कद के व्यक्ति हैं। उनके चेहरे से ही झलक जाता है कि वह मजबूत इच्छाशक्ति और दमदार इच्छाशक्ति के व्यक्ति हैं।' मैंने गौर किया कि इटली के लोग उनसे प्रेम करते हैं।'

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विचारक हैं।

मुंजे ने 1931 में इटली की यात्रा की थी और वहीं उन्होंने फासीवादी सत्ता के अनेक समर्थकों से मुलाकात की थी। वह बोनिटो मुसोलिनी और उनकी विचारधारा से, और युवाओं में सैन्यवाद की भावाना के साचार करने की उनकी कोशिश से बहुत प्रभावित थे। आग्रह करने पर मुंजे को मुसोलिनी तक से मुलाकात हुई। जब ड्यूस मुंजे, जो कि हिंदू दक्षिणांश के एक बड़े विच

